# अपने शहर के लोग

कितने अजीव लगे मुझे अपने शहर के लोग ।
अब, अजनबी ही बन गये, अपने शहर के लोग ।।

गुरबत ने, जब से घर मेरे डेरा जमा लिया।
आते नहीं हैं, घर मेरे, अपने शहर के लोग ।।

दोस्तों ने मुड़ के फिर देखा कभी नहीं ।
अंजान बन गये मेरे अपने शहर के लोग ।।

जिसने वफा के नाम पर "सब कुछ" लुटा दिया।
उसको "फकीर" कहते हैं, अपने शहर के लोग ।।

दीवानगी की "हद" को, जब मैं, पार गया गया।
कहने लगे, "पागल" मुझे, अपने शहर के लोग।।

सुनकर के मेरा नाम अब "रवि" मेरे दोस्त ।
मिलते नहीं हैं, अब गले, अपने शहर के लोग ।।

---

महेन्द्र सिंह, आशुलिपिक (हिन्दी)